SHODHASAMHITA
शोधसंहिता
ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध एवं शैक्षिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता

Dr. Vishnu kumar
Assistant professor, Department of Education Jain vishva Bharati institute, Ladnun
Kumarvishnu1975@gmail.com

संरा ा–जे. कृष्णमूर्ति ने किसी संस्था का आश्रय लेकर किसी देश विशेष, भाषा विशेष या किसी विशिष्ट संस्कृति के तहत अपने शिक्षा दर्शन को प्रचारित नहीं किया। जे. कृष्णमूर्ति तो मुक्त पंछी की तरह नित्य सम्पूर्ण मुक्त जीवन का गीत गाते हुए विचरण करते रहे। सन् 1922 में जे. कृष्णमूर्ति को गहरी आध्यात्मिक अनुभूतियाँ हुई। उस समय वे उस करूणा से गुजरे जिसके स्पर्श ने उनके सारे दुःख कष्टों को हर लिया। इसके बाद आगे के साठ से भी अधिक वर्षों तक जब कि 17 फरवरी 1986 को उनकी मृत्यु नहीं हुई वे अनथक रूप से पूरी दुनिया का दौरा करते रहे। सार्वजनिक वार्ताएँ और साक्षात्कार देते हुए, निजी विवेचनाएँ और संवाद करते हुए, लिखते और बोलते हुए उन्होनें अपनी भूमिका सत्य के प्रेमी और एक मित्र के रूप में निभाई – गुरू के रूप में उन्होंने स्वयं को कभी नहीं रखा।

प्रस्तावना– जे. कृष्णमूर्ति का शिक्षा–दर्शन उनकी अन्तर्दृष्टि का सम्प्रेषण था। वह महज किताबी या बौद्धिक ज्ञान पर आधारित नहीं था। उन्होंने दर्शनशास्त्र की किसी नई पद्धति या प्रणाली की व्याख्या नहीं की, बल्कि हमारी जो रोजमर्रा की जिन्दगी है उसी को इन्होंने शिक्षा के द्वारा जोड़कर अपने शैक्षिक विचार प्रकट किये है। आज इन्सान भय, दुःख, क्रोध इत्यादि संवेगों से घिरकर सुरक्षा और सुख की तलाश में भटकता रहा है आज संसार में भ्रष्टाचार और हिंसा जैसी चुनौतियाँ मनुष्य के सामने है। उन्होंने समाज में फैली विकृतियों को दूर करने के लिए शिक्षा द्वारा ऐसे आमूलचूल और बुनियादी परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया जो एक नितान्त नये मानस और नयी संस्कृति को जन्म दे सके।ॅकि जे. कृष्णमूर्ति को पूरे विश्व में अब तक के महानतम् धार्मिक शिक्षकों में से एक माना जाता है, फिर भी उन्होंने स्वयं को कभी किसी धर्म, सम्प्रदाय या देश विशेष से जुड़ा हुआ नहीं माना। उन्होंने स्वयं को कभी किसी राजनैतिक सोच या विचारधारा से नहीं जोड़ा। इसके विपरीत उनका कहना था कि ये चीजें मनुष्य–मनुष्य के बीच अलगाव पैदा करती हैं और अन्ततः संघर्ष और युद्ध का कारण बनती हैं। उन्होंने इस बात पर हमेशा जोर दिया कि मनुष्य की चेतना और मानवजाति की चेतना अलग नहीं है, बल्कि हमारे भीतर पूरी मानव जाति, पूरा विश्व प्रतिबिम्बित होता है। प्रकृति और परिवेश से मनुष्य के गहरे रिश्ते और तादात्म की उन्होंने बाबत की। इस तरह उनकी शिक्षा मानव निर्मित सारी दीवारों, धार्मिक विश्वासों, राष्ट्रीय बँटवारों और साम्प्रदायिक दृष्टिकोणों से परे जाने का सन्देश देती है। अपने इन्हीं विचारों को जे. कृष्णमूर्ति ने निम्न शब्दों में व्यक्त

किया है – ''शिक्षा सच्चे अर्थ में व्यक्ति को परिपक्व तथा स्वतन्त्र होने एवं प्रेम तथा अच्छाई का विकास करने में सहायता करती है।''

जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षक :–

मौजूदा विश्व संकट से शिक्षा का घनिष्ठ संबंध है। शिक्षा के द्वारा हम ऐसे व्यक्ति तैयार कर सकते हैं जो शांतिपूर्ण विश्व की रचना कर सके। शिक्षक की भूमिका इसमें सबसे महत्वपूर्ण हो जाती है। क्योंकि एक शिक्षक वह शक्ति है जो राष्ट्र के भावी नागरिकों को अपने हाथों से निर्मित करता है। जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षक में निम्न गुणों का होना आवश्यक है –

स्वयं को समझने वाला – शिक्षक को बच्चों को वर्तमान परिवेश की सभी समस्याओं का समाधान खोजना सिखाना चाहिए। बच्चों के उचित परिवेश का निर्माण करने में तथा उनके जीवन–बोध का विकास करने में अपनी समस्त विचार–क्रिया, समस्त सावधानियाँ तथा समस्त प्रेम को लगा देना चाहिए। ऐसा करने के लिए आवश्यक है कि शिक्षक विचार प्रणालियों, व्यवस्थाओं और विश्वासों पर निर्भर रहने के बजाय स्वयं अपने को समझे।

बाल–मनोविज्ञान का ज्ञाता – शिक्षक को यह ज्ञान होना चाहिए कि बालक के प्रत्येक व्यवहार के पीछे क्या कारण छुपे हैं इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को जानकर ही शिक्षक बालक के समग्र विकास में उसकी सहायता कर पायेगा। बालक के खेलते समय उसकी विविध मनोदशाओं को जानने के लिए शिक्षक को सतर्क अवलोकन करना होगा।

सजग व निष्ठावान – शिक्षक को अपने कर्तव्यों के प्रति सजग व निष्ठावान होना चाहिए क्योंकि जब वह अपने अध्यापन कार्य के प्रति सजग व निष्ठावान होगा तभी वह बच्चों का समग्र विकास कर पायेगा। यदि किसी बच्चे का अध्ययन करना हो तो यह आवश्यक है कि शिक्षक सजग, सावधान और आत्म–सचेत हो।

बच्चों के प्रति सम्मानभाव रखने वाला – शिक्षक को बालक के प्रति सम्मानभाव रखना चाहिए। जब शिक्षक सत्तावादी दृष्टिकोण अपनाता है तो छात्र का व्यक्तित्व पूर्ण विकास नहीं कर पाता जिससे संसार में कई तरह के द्वन्द्व व भ्रांतियां उत्पन्न होती है। बालक का सर्वांगीण विकास हो इसके लिए शिक्षक को बच्चे के प्रति सम्मानभाव रखना चाहिए।

अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूकता – शिक्षक का कार्य ऐसे जीवित प्राणियों से व्यवहार करना होता है जिनको आसानी से प्रभावित किया जा सकता है, जो चंचल और संवेदनशील हैं, जो भय और प्रेम से परिपूर्ण है न कि मशीनी संरचनाओं से जिनको में जल्दी से मरम्मत कर ठीक कर देना है। अतः जब शिक्षक अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक रहेगा तभी वह श्रेष्ठतम अध्यापन कार्य कर सकेगा।

नई पीढ़ी का निर्माण करने वाला – शिक्षक को ऐसी पीढ़ी का निर्माण करने वाला होना चाहिए जो युद्धों, व सुनियोजित हत्याकांडों से पृथक रहे। सम्पूर्ण विश्व को एक समझने वाली तथा सत्य से जुड़ी हुई पीढ़ी का निर्माण करने का दायित्व शिक्षक का ही है।

बच्चें में गहरी अंतर्दृष्टि व समझ उत्पन्न करने वाला – शिक्षक को बालकों को गहन ज्ञान प्रदान करने वाला होना चाहिए सीमित व सतही ज्ञान से हटकर आन्तरिक ज्ञान प्रदान करना चाहिए। बालकों में ज्ञात के पीछे के कारणों को जानने व अज्ञात को खोजने की अंतर्दृष्टि विकसित करने वाला शिक्षक होना चाहिए।

बालक को प्रज्ञावान बनाने वाला – प्रज्ञा का परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने से कोई संबंध नहीं है। प्रज्ञा वह सहज प्रत्यक्ष दर्शन है जो मनुष्य को शक्तिशाली एवं स्वतंत्र बनाती है। बालक को इस संसार में जीने के लिए तैयार करना होगा। संसार की अव्यवस्था, विनाश, पतन से बचने के लिए बालकों को प्रज्ञावान बनाना अत्यंत आवश्यक हैं इसमें एक शिक्षक ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

विद्यार्थियों को उद्यमी बनाने वाला –शिक्षक को स्वयं को तथा विद्यार्थियों को इस प्रकार का बनाना चाहिए कि जैसे ही कोई समस्या उत्पन्न होती है, वह उसका सामना करे, उसकी प्रकृति का अवलोकन करे और तत्काल उसका समाधान कर पाये। उद्यमी और सचेतनता यह होश और ध्यान है जो सहज रूप से असीम सावधान, सरोकार और स्नेह की ताजगी को जन्म देता है। इन सभी गुणों के अलावा शिक्षक आर्थिक व मनोवैज्ञानिक रूप से स्वयं को सुरक्षित महसूस करे। आर्थिक रूप से सुरक्षित का तात्पर्य है कि उसकी विद्यालय में देखभाल की जा रही है तथा वह आर्थिक चिन्ताओं से मुक्त है। मनोवैज्ञानिक रूप से सुरक्षित यानि अपने पेशे से संतुष्ट है।

जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षार्थी :–

जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार विद्यार्थी का कार्य केवल अध्ययन करना और सीखना नहीं है बल्कि इसे क्रियात्मक रूप भी देना है। विद्यार्थी का उत्तरदायित्व है कि वह क्रूरता से सम्बन्धित तथ्यों को देखे ओर बिना किसी के समझाये, मनाये या फुसलाये इसके गूढ़ आशय को समझे और इस संबंध में कुछ करे। जो विद्यार्थी दैनिक जीवन से कोई वास्ता नहीं रखता। वह स्वभावतः पाखंडी और आडम्बरयुक्त बन जाता है। अतः विद्यार्थी को दैनिक जीवन से सरोकार रखना चाहिए। शिक्षार्थी भद्रता और शिष्टता का गुण रखने वाला होना चाहिए। विद्यार्थी को दूसरे का ख्याल अर्थात् दूसरे के लिए सोच–विचार करना चाहिए। दूसरों के प्रति देखभाल का भाव रखना चाहिए। विद्यार्थी को मनोवैज्ञानिक तौर पर स्वतंत्र होते हुए अन्वेषक की तरह चारों तरफ अवलोकन करते हुए सीखना चाहिए। इस सीखने में शिक्षक की सहायता लेनी चाहिए। यदि शिक्षक विद्यार्थी को स्वयं को सीख पाने में मदद नहीं कर पा रहा हो तो विद्यार्थी का उत्तरदायित्व है कि वह स्वयं का अध्ययन करे। यह सीखे कि वह क्या है। विद्यार्थी को स्नेह भाव से युक्त होना चाहिए। विद्यार्थी को अपने बोलने में सावधानी, अपने शरीर की सावधानी, लोगों का नजरिया इन सभी में सावधानी रखने की आवश्यकता है।

विद्यार्थी स्वयं को बदलकर ही संसार को बदल सकता है। बालक को स्वयं के बारे में सर्वप्रथम सीखना चाहिए क्योंकि यही मौलिक और बुनियादी शिक्षा है। शिष्य वह है जो सीखता है न कि आज्ञा मानता है। शिष्य वह है जो निरन्तर सजग है, सीख रहा है, लगातार सीख रहा है, अनुकरण नहीं कर रहा है, नकल नहीं कर रहा है। विद्यार्थी में सावधानी, सजगता, अवलोकन और स्वतंत्रता का बोध होना चाहिए। विद्यार्थियों का उत्तरदायित्व है कि वे अपनी शिक्षा सम्यक् रूप से ग्रहण करे तथा अपने उत्तरदायित्व का बोध रखे। आशाओं के अनुरूप नहीं होने पर बालक में माता–पिता द्वारा अपराधबोध की भावना को विकसित नहीं करना चाहिए।

जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध :–

शिक्षक, शिक्षार्थी को शिक्षा देने वाला होता है और शिक्षार्थी शिक्षा लेने वाला। जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षक व छात्र के मध्य कोई उच्चपद व निम्नपद न हो। दोनों समान स्तर पर समझे जायें। इससे उन दोनों के मध्य की दूरी समाप्त होगी तथा बच्चों में दायित्व बोध का विकास होगा। अहंभाव त्यागकर जब दोनों शिक्षण कार्य में विनम्रता से भागीदार बनेंगे तभी सत्य अर्थात् सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति संभव है। शिक्षक व छात्र के मध्य केवल कार्यात्मक अंतर है। यदि शिक्षक को सत्ता पक्ष माना जाता है तो इससे वातावरण भययुक्त होगा तथा यह बच्चों को क्रूरता की दुनिया में ले जाने वाला होगा। इसके विपरीत छात्र अध्यापक की जोड़ी मिलकर बराबरी से सीखने का पुरूषार्थ कर रही है ऐसा वातावरण और आन्तरिक भाव

रहेगा तो निर्भय, मुक्त मन की अच्छाई पनप सकेगी। छात्र व अध्यापक दोनों की अच्छाई पुष्पित होने के लिए आचरण, कार्य और सम्बन्ध इन सभी में उत्कृष्टता होनी चाहिए।

अध्यापक को दर्पण की तरह बच्चों के साथ रहना चाहिए जिसमें छात्र अपनी बुराइयों को देखकर उनसे सीखने का प्रयास कर सकेंगे और सम्यक् सिखाना ही शिक्षा का उद्देश्य है। अगर शिक्षक स्वयं को उच्च दिखाता है और वह बालक को स्वयं को हीन मानने पर बाध्य करता है ऐसी स्थिति में उन दोनों के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं रह जाता तथा इससे विद्यार्थियों में भय तनाव और दबाव उत्पन्न होता है और वह भावी जीवन में या तो आक्रामक बना रहेगा या जी हुजुरी एवं चाटुकारिता में लगा रहेगा। शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों के मध्य सम्बन्ध के लिए अत्यधिक बोध व प्रज्ञा चाहिए। जब दोनों अपने मध्य के सम्बन्धों को असाधारण महत्व का स्थापित कर रहे होते हैं तब वे एक सही सम्बन्ध स्थापित कर रहे होते हैं। यह शिक्षा का ही अंग है तथा यह मात्र शैक्षिक विषयों को पढ़ाने से कहीं बढ़कर है। शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य प्रेम व विनम्रता का संबंध होना चाहिये जिससे बालक सम्यक् शिक्षा ग्रहण कर पाये। शिक्षक यदि अपने पद को सत्ता मानता है तो वह बालक की पूर्णता और समग्रता को विखंडित करता है। इसलिए शिक्षक छात्र का संबंध प्रेम व सम्मान पर आधारित होना चाहिए। जब ये एक दूसरे को सम्मान व सद्भाव देंगे तो इन दोनों में सजीव संबंध बनेगा तथा दोनों अपने–अपने कार्यो को सम्यक् तरीके से कर पायेंगे।

जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता –

1. वर्तमान शिक्षा मानव के एक अंश का विकास करती है तथा वह मानवोचित गुणों को विकसित नहीं कर पाती जिससे विश्व में चारों तरफ अराजकता, भय, अहिंसा जैसी समस्यायें फैली हुई हैं। अतः जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षा के उद्देश्यों से संबंधित विचार वर्तमान की ज्वलन्त समस्याओं को दूर करने में सहायक हो सकते हैं।

2. आज पुरोहित या राजनीतिज्ञ, धनी या निर्धन, सभी बडी आसानी से युवकों को एक विशेष प्रकार से सोचने के लिए प्रभावित कर लेते हैं लेकिन जब जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार आत्मबोध, स्वतंत्र चिंतन हेतु शिक्षा प्रदान की जायेगी तो नवयुवक गलत मार्गों पर नहीं जायेंगे तथा तोते की तरह उनके नारों को नहीं दोहराएँगे।

3. वर्तमान में विद्यालयों को धन कमाने का जरिया बना लिया है। बड़े–बड़े भवनों का निर्माण कर उनमें अत्यधिक मात्रा में बच्चों को पढ़ाया जाता है। भवन–निर्माण के खर्च को प्राप्त करने के लिए बच्चों से अधिक शुल्क लिया जाता है। बड़ी–बड़ी

संस्थाओं में बच्चों को डरा–धमकाकर शिक्षण कार्य किया जाता है। जितनी अधिक बड़ी संख्या होगी बालक पर अच्छे प्राप्तांक लाने का दबाव उतना ही अधिक होगा जिससे बालक भय और चिन्ताग्रस्त हो जाता है। जे. कृष्णमूर्ति ने छोटे विद्यालयों तथा कम छात्र संख्या की बात कही है अतः उनके विचार वर्तमान विद्यालय पद्धति पर लागू किये जायें तो उपरोक्त समस्यायें स्वतः ही दूर हो जायेगी।

4. आज का पाठ्यक्रम ऐसा है जिससे सिर्फ बौद्धिक विकास होता है। इससे बाहरी कार्यकुशलता ही विकसित होती है, मनुष्य की आंतरिक प्रवृत्ति की या तो शिक्षा पूर्णतया उपेक्षा कर देती है या उसे जान–बूझकर विकृत कर देती है। जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के पाठ्यक्रम में जीवन से सम्बन्धित सभी पक्षों को स्थान दिया जाये तो मनुष्य का समग्र विकास हो सकेगा।

5. आज की शिक्षा संस्थाओं में जीविका चलाने का, विज्ञान तकनीक का महत्व बढ़ा–चढ़ाकर है और भूगोल, इतिहास, गणित इत्यादि दूसरे विषय शिक्षालयों से बाहर निकलते ही भूल जाते हैं। मानव विश्व की आज की जो विकृत अवस्था है उसी को कायम रखने की विषयवस्तु बालक को प्रदत्त की जाती है। इस समस्या को दूर करने में जे. कृष्णमूर्ति के पाठ्यक्रम सम्बन्धी विचार अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते है।

6. वर्तमान समय में शिक्षक स्वयं को शासक समझता है तथा अपने कार्य में पूर्ण ईमानदारी नहीं रखता सिर्फ जीविकोपार्जन के लिए इस क्षेत्र में प्रवेश करता है। आज अत्यधिक मात्रा में शिक्षक तैयार किये जा रहे हैं परन्तु उनमें शिक्षक के यथोचित गुणों का अभाव है। अतः जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षक सम्बन्धी विचारों को आज की शिक्षा व्यवस्था में लागू किया जाये तो प्रशिक्षण महाविद्यालयों में उत्तम शिक्षक पैदा किये जा सकते है।

7. वर्तमान में शिक्षार्थी अनुकरण क्रिया द्वारा सीख रहा है। शिक्षक जो कुछ पढ़ाता है शिक्षार्थी उसे ही सही मानकर ग्रहण कर लेता है। अनुकरण प्रवृत्ति के कारण बालक किसी की प्रतिमूरत बन जाता है। उसकी स्वयं की सोच का विकास नहीं हो पता इसलिए जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षार्थी संबंधी विचार जो शिक्षार्थी को सजग, अन्वेषक बनाने पर जोर देते हैं, इस समस्या को दूर करनें में उपयोगी हो सकते हैं।

8. वर्तमान में शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य शासक व प्रजा का संबंध है जिससे बालक में भय, कुण्ठा जैसे मनोविकार जन्म ले रहे हैं जो बालक के व्यक्तित्व विकास में बाधक तत्व हैं यदि जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षक–शिक्षार्थी के समान स्तर के विचार को वर्तमान

में लागू किया जाता है तो दोनों के मध्य प्रेम व विनम्रता के संबंध होगें तथा शिक्षक स्वयं को तथा शिक्षार्थी को मानवता की भलाई के लिए प्रस्तुत कर पायेगा।

9. वर्तमान में मृतः प्रायः शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है जिससे बालक को शिक्षण में अरूचि उत्पन्न होती है तथा वह ज्ञान को समग्र रूप से ग्रहण करने में असमर्थ हो जाता है यदि जे. कृष्णमूर्ति के विचारों के अनुसार जीवन से जोड़कर शिक्षण कार्य करवाया जाये तो बालक रूचिपूर्ण ज्ञान को ग्रहण कर पायेगा।

10. वर्तमान में अधिकांश बालकों का कक्षा शिक्षण के समय ध्यान कक्षा में न होकर इधर–उधर के व्यर्थ विचारों में जाता है। इसके लिए जे. कृष्णमूर्ति ने बताया है कि विद्यार्थियों को विचारों के इधर–उधर जाने के कारणों का पता लगाकर उनको दूर करना चाहिए न कि मन में आने वाले विचारों का दबाना चाहिए। शिक्षक को इस कार्य में शिक्षार्थी का सहयोग करना चाहिए।

11. शिक्षण कार्य के समय छात्र–अध्यापक दोनों को स्वयं का ध्यान शिक्षण में लगाना होगा तभी शिक्षण कार्य जीवन्त हो पायेगा।

12. आज की शिक्षा–व्यवस्था में बच्चों पर दमानत्मक अनुशासन लागू किया जाता है। जे. कृष्णमूर्ति ने दमनात्मक अनुशासन का अनैतिक प्रभाव मनोविज्ञान के आधार पर स्पष्ट किया है इसे जानकर शिक्षक दमनात्मक अनुशासन की जगह स्व–अनुशासन को अपनायेंगे।

13. जे. कृष्णमूर्ति के अनुशासनहीनता के कारणों को जानने का विचार वर्तमान समय में अत्यंत उपयोगी है।

14. वर्तमान विश्व में हिंसा, युद्ध, स्वार्थता, इत्यादि का बोलबाला है। लोग अपने रूढ़िवादी मूल्यों के लिए एक–दूसरे से वैमनस्य भाव बढ़ा रहे है। सभी अपने–अपने मूल्यों को सही ठहराते हैं तथा कट्टर संस्कारवादी बनकर समुदाय उत्पन्न कर रहे हैं जिससे मानव जाति के लिए संकट पैदा हो गया है। जे. कृष्णमूर्ति ने इस प्रकार के विचारों को नैतिक मूल्य नहीं माना है उनके अनुसार जब व्यक्ति में मनोवैज्ञानिक समस्याएँ नहीं होगी तभी वह सम्यक् व्यवहार कर पायेगा यही उसका नैतिक मूल्य होगा। इस प्रकार जे. कृष्णमूर्ति के नैतिक विचार विभिन्न अर्थों के साथ शिक्षा में प्रयुक्त किये जाते हैं तो शैक्षिक जगत् के साथ–साथ सम्पूर्ण समाज भी लाभान्वित होगा।

15. जे. कृष्णमूर्ति के मूल्यांकन सम्बन्धी विचार वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्तमान समाज में प्रतियोगिता व तुलनात्मक प्रवृत्ति के दबाव के कारण परीक्षाफल में कम अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी आत्महत्या कर रहे हैं यदि जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार मूल्यांकन पद्धति लागू कर दी जाये तो बालकों की अवसाद में जाने की समस्या का हल हो सकता है।

16. जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार सह–शिक्षा देने से समाज में अनैतिकता कम होगी।

17. वर्तमान समय के युवा वर्ग को गर्त में जाने से बचाने के लिए युवाओं को यौन–शिक्षा देनी चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.	कृष्णमूर्ति जे	:	आमूल क्रांति की आवश्यकता, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, राजघाटफोर्ट, वाराणसी
2.	कृष्णमूर्ति जे	:	आन्तरिक प्रस्फुटन, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, राजघाटफोर्ट, वाराणसी
3.	कृष्णमूर्ति जे	:	अन्तिम वार्ताएं
			बच्चों के मित्र
4.	कृष्णमूर्ति जे	:	जे. कृष्णमूर्ति, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, राजघाटफोर्ट, वाराणसी
5.	Buch M.B.	:	Fourth and fifth survey of Reseach in Education
6.	कृष्णमूर्ति जे	:	ज्ञात से मुक्ति, ध्यान मन, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, राजघाटफोर्ट, वाराणसी
7.	कृष्णमूर्ति जे	:	हिंसा से परे, ध्यान मन, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, राजघाटफोर्ट, वाराणसी

8.	कृष्णमूर्ति जे	:	जीवन और दर्शन, सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजघाट, वाराणसी
9.	कृष्णमूर्ति जे	:	जीवन की पुस्तक, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, राजघाटफोर्ट, वाराणसी
10.	कृष्णमूर्ति जे	:	जीवन भाष्य खण्ड–1, सर्व सेवा संघ–प्रकशन राजघाट, वाराणसी
11.	कृष्णमूर्ति जे	:	जीवन भाष्य खण्ड–3, सर्व सेवा संघ–प्रकशन राजघाट, वाराणसी
12.	कृष्णमूर्ति जे	:	जीवन भाष्य खण्ड–3, सर्व सेवा संघ–प्रकशन राजघाट, वाराणसी
13.	कृष्णमूर्ति जे	:	परम्परा जिसने अपनी आत्मा खो दी है, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, राजघाटफोर्ट, वाराणसी
14.	कृष्णमूर्ति जे	:	प्रेम स्वयं से एक संलाप, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, राजघाटफोर्ट, वाराणसी
15.	शर्मा, आर.ए.	:	शिक्षा अनुसंधान, आर.लाल बुक डिपो
16.	सिंह कुमार अरूण	:	मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, मोतीलाल बनारसीदास